अध्याय 6: एक टोकरी भर मिट्टी

विषय-सूची 11 प्रश्नावली · 45 प्रश्न

प्रश्नावली 6.1	मेरी समझ से	4 प्रश्न
प्रश्नावली 6.2	मिलकर करें मिलान	8 प्रश्न
प्रश्नावली 6.3	पंक्तियों पर चर्चा	2 प्रश्न
प्रश्नावली 6.4	सोच-विचार के लिए	6 प्रश्न
प्रश्नावली 6.5	अनुमान और कल्पना से	4 प्रश्न
प्रश्नावली 6.6	'कि' और 'की' का उपयोग	2 प्रश्न
प्रश्नावली 6.7	मुहावरे	2 प्रश्न
प्रश्नावली 6.8	काल	1 प्रश्न
प्रश्नावली 6.9	वचन की पहचान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 6.10	शब्दकोश का उपयोग	5 प्रश्न
प्रश्नावली 6.11	भावों की पहचान	10 प्रश्न

प्रश्नावली 6.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

जमींदार को झोंपड़ी हटाने की आवश्यकता क्यों लगी? (एक से अधिक उत्तर हो सकते हैं।) (क) झोंपड़ी जर्जर हो चुकी थी (ख) झोंपड़ी रास्ते में बाधा थी (ग) वह अहाते का विस्तार करना चाहता था (घ) वृद्धा से उसका कोई पुराना झगड़ा था

हल

पाठ में बताया गया है कि जमींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई।
पाठ में झोंपड़ी के जर्जर होने या रास्ते में बाधा होने का कोई उल्लेख नहीं है।
जमींदार का वृद्धा से कोई पुराना झगड़ा भी नहीं था — वह केवल अपनी संपत्ति का विस्तार करना चाहता था।
अतः सही उत्तर है: (ग) वह अहाते का विस्तार करना चाहता था।

उत्तर: (ग) वह अहाते का विस्तार करना चाहता था

प्रश्न 2

वृद्धा ने मिट्टी ले जाने की अनुमति कैसे माँगी? (क) क्रोध और झगड़ा करके (ख) अदालत से अनुमति लेकर (ग) विनती और नम्रता से (घ) चुपचाप उठाकर ले गई

हल

वृद्धा ने जमींदार साहब के सामने हाथ जोड़कर विनम्रतापूर्वक विनती की — 'महाराज, क्षमा करें तो एक विनती है।'

उसने बताया कि वह झोंपड़ी से एक टोकरी मिट्टी ले जाकर पोती के लिए चूल्हा बनाना चाहती है।

यह सब उसने नम्रता और विनय के साथ, पैरों पर गिरकर माँगा।

अतः सही उत्तर है: (ग) विनती और नम्रता से।

उत्तर: (ग) विनती और नम्रता से

प्रश्न 3

वृद्धा की पोती का व्यवहार किस भाव को दर्शाता है? (क) दया (ख) लगाव (ग) गुस्सा (घ) डर

हल

पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया था क्योंकि उसे अपनी झोंपड़ी और अपने घर से गहरा लगाव था।

वह बार-बार कहती थी — 'अपने घर चल, वहीं रोटी खाऊँगी।'

यह व्यवहार घर के प्रति गहरे लगाव और मोह को दर्शाता है।

अतः सही उत्तर है: (ख) लगाव।

उत्तर: (ख) लगाव

प्रश्न 4

कहानी का अंत कैसा है? (क) दुखद (ख) सुखद (ग) प्रेरणादायक (घ) सकारात्मक

हल

कहानी का अंत प्रेरणादायक है — जमींदार अपने अन्याय को समझकर वृद्धा से क्षमा माँगता है और झोंपड़ी वापस कर देता है।

यह अंत पाठक को यह सोचने पर मजबूर करता है कि सत्य, विनय और नैतिक साहस अन्याय को भी परास्त कर सकते हैं।

अतः सही उत्तर है: (ग) प्रेरणादायक।

उत्तर: (ग) प्रेरणादायक

प्रश्नावली 6.2 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

पाठ से चुनकर नीचे दिए गए वाक्य के सामने दो-दो निष्कर्ष दिए गए हैं। इन्हें इनके सर्वाधिक उपयुक्त निष्कर्षों से मिलाइए। वाक्य 1: 'अब यही उसकी पोती इस वृद्धावस्था में एकमात्र आधार थी।' निष्कर्ष: • वृद्धावस्था में वृद्धा का सहारा उसकी पोती ही थी। • वृद्धावस्था में पोती का सहारा वृद्धा थी।

हल

वाक्य में कहा गया है कि वृद्धा के पति, पुत्र और पुत्रवधू सब बीत चुके थे — केवल पोती बची थी।
अतः वृद्धावस्था में वृद्धा का एकमात्र सहारा उसकी पोती ही थी — यही सर्वाधिक उपयुक्त निष्कर्ष है।
दूसरा विकल्प 'पोती का सहारा वृद्धा थी' उलटा अर्थ देता है, जो संदर्भ से मेल नहीं खाता।

उत्तर: वृद्धावस्था में वृद्धा का सहारा उसकी पोती ही थी।

प्रश्न 2

वाक्य 2: 'बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से उस झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया।' निष्कर्ष: • जमींदार ने वकीलों से सलाह लेकर झोंपड़ी पर न्यायपूर्वक कब्जा किया। • जमींदार ने वकीलों को पैसे देकर कानूनी दाँव-पेंच से झोंपड़ी पर कब्जा किया।

हल

'बाल की खाल निकालना' मुहावरे का अर्थ है — बहुत बारीकी से व चालाकी से तर्क देना।
'थैली गरम करना' का अर्थ है — रिश्वत देना या धन से काम कराना।
इस वाक्य से स्पष्ट है कि जमींदार ने वकीलों को पैसे देकर कानूनी चालाकी से झोंपड़ी हड़पी।
यह न्यायपूर्वक नहीं, बल्कि छल से किया गया था।

उत्तर: जमींदार ने वकीलों को पैसे देकर कानूनी दाँव-पेंच से झोंपड़ी पर कब्जा किया।

प्रश्न 3

वाक्य 3: 'आपसे एक टोकरी भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है।' निष्कर्ष: • वृद्धा ने जमींदार को कमज़ोर साबित करने के लिए टोकरी उठाने को कहा। • वृद्धा ने टोकरी को प्रतीक बनाकर जमींदार को उसके अन्याय का अनुभव कराया।

हल

वृद्धा ने टोकरी को प्रतीक के रूप में प्रयोग किया — एक टोकरी मिट्टी नहीं उठा सकते, तो हजारों टोकरियों (पूरी झोंपड़ी) का बोझ कैसे उठाएँगे?
यह वाक्य केवल शारीरिक शक्ति की बात नहीं कर रहा, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी और अन्याय के बोझ की ओर संकेत कर रहा है।
अतः उपयुक्त निष्कर्ष है: वृद्धा ने टोकरी को प्रतीक बनाकर जमींदार को उसके अन्याय का अनुभव कराया।

उत्तर: वृद्धा ने टोकरी को प्रतीक बनाकर जमींदार को उसके अन्याय का अनुभव कराया।

प्रश्न 4

वाक्य 4: 'ज़मींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे परंतु वृद्धा के उपयुक्त वचन सुनते ही उनकी आँखें खुल गईं।' निष्कर्ष: • धन और अहंकार ने जमींदार को मानवीयता और करुणा से दूर कर दिया था। • संपत्ति के घमंड को भूलकर जमींदार अपने कर्तव्यों को पूरा कर रहे थे।

हल

वाक्य में स्पष्ट है कि जमींदार धन के मद में अपना कर्तव्य भूल गया था — वृद्धा की उचित बात सुनकर ही उसकी आँखें खुलीं।
यह दर्शाता है कि धन और अहंकार ने उसे मानवीयता से दूर कर दिया था।
दूसरा विकल्प गलत है — वह कर्तव्य 'पूरा नहीं कर रहा था', बल्कि वृद्धा के वचनों से उसे बोध हुआ।

उत्तर: धन और अहंकार ने जमींदार को मानवीयता और करुणा से दूर कर दिया था।

प्रश्न 5

वाक्य 5: 'कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी।' निष्कर्ष: • वृद्धा ने अपने व्यवहार पर पछताकर जमींदार से क्षमा माँगी। • अपने द्वारा किए अन्याय पर पछताकर जमींदार ने क्षमा माँगी।

हल

'कृतकर्म का पश्चाताप' का अर्थ है — अपने किए हुए कार्य पर पश्चाताप।
कहानी में जमींदार को अपने अन्यायपूर्ण कार्य (झोंपड़ी छीनने) का पश्चाताप हुआ और उसने वृद्धा से क्षमा माँगी।
पहला विकल्प गलत है — वृद्धा ने कोई गलत काम नहीं किया था।

उत्तर: अपने द्वारा किए अन्याय पर पछताकर जमींदार ने क्षमा माँगी।

प्रश्न 6

वाक्य 6: 'उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे?' निष्कर्ष: • वृद्धा ने प्रतीकात्मक रूप से कहा कि अन्याय का नैतिक भार उठाना आसान नहीं है। • वृद्धा ने जमींदार की उम्र और शक्ति पर व्यंग्य करते हुए यह बात कही।

हल

वृद्धा के इस वाक्य में गहरा प्रतीकात्मक अर्थ है — एक टोकरी मिट्टी नहीं उठा सकते तो पूरी झोंपड़ी की मिट्टी (अन्याय) का बोझ जन्म-भर कैसे उठाएँगे?
यह केवल शारीरिक शक्ति का प्रश्न नहीं है, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी और पाप के बोझ की बात है।
अतः उपयुक्त निष्कर्ष: वृद्धा ने प्रतीकात्मक रूप से कहा कि अन्याय का नैतिक भार उठाना आसान नहीं है।

उत्तर: वृद्धा ने प्रतीकात्मक रूप से कहा कि अन्याय का नैतिक भार उठाना आसान नहीं है।

प्रश्न 7

वाक्य 7: 'कृपा करके इस टोकरी को ज़रा हाथ लगाइए जिससे कि मैं उसे अपने सिर पर धर लूँ।' निष्कर्ष: • वृद्धा ने टोकरी उठाने में सहायता के लिए जमींदार से विनम्र निवेदन किया। • वृद्धा ने चतुराई से जमींदार को शर्मिंदा करने की

योजना बनाई।

हल

वृद्धा का यह निवेदन बाहर से तो विनम्र लगता है, लेकिन इसके पीछे एक चतुर योजना थी।
वह जानती थी कि जमींदार टोकरी नहीं उठा पाएगा और इस प्रकार उसे अपने अन्याय का बोध होगा।
दोनों निष्कर्ष आंशिक रूप से सही हैं, परंतु सर्वाधिक उपयुक्त: वृद्धा ने चतुराई से जमींदार को शर्मिंदा करने की योजना बनाई।

उत्तर: वृद्धा ने चतुराई से जमींदार को शर्मिंदा करने की योजना बनाई।

प्रश्न 8

वाक्य 8: 'उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी।' निष्कर्ष: • झोंपड़ी में प्रवेश करते ही वृद्धा पुराने दिनों के कारण भावुक हो गई। • झोंपड़ी में जाकर वृद्धा डर गई कि जमींदार उसे फिर से बाहर निकाल देगा और रोने लगी।

हल

पाठ में स्पष्ट है: 'वहाँ जाते ही उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी।'
झोंपड़ी में उसके अनेक जीवन-अनुभव और यादें थीं — वहीं उसके अपने जिए थे और वहीं वे सब गुजर गए।
यह भावुकता डर से नहीं, बल्कि पुरानी यादों और लगाव से उत्पन्न हुई।

उत्तर: झोंपड़ी में प्रवेश करते ही वृद्धा पुराने दिनों के कारण भावुक हो गई।

प्रश्नावली 6.3 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

निम्नलिखित पंक्ति का अर्थ अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए: "आपसे एक टोकरी भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे?"

हल

इस पंक्ति में वृद्धा ने एक साथ शारीरिक और नैतिक — दोनों स्तरों पर बात की है।
शाब्दिक अर्थ: जमींदार एक छोटी-सी टोकरी भर मिट्टी नहीं उठा सका — तो पूरी झोंपड़ी की मिट्टी का भार उठाना उनके लिए असंभव है।
प्रतीकात्मक अर्थ: झोंपड़ी छीनना एक अन्याय था; इस अन्याय का नैतिक और पापकर्म का बोझ जन्म-भर उठाना पड़ेगा।
वृद्धा ने बड़ी बुद्धिमानी से जमींदार को उसके अपराध का बोध कराया — न क्रोध से, न अदालत से, बल्कि सत्य के सरल शब्दों से।

उत्तर: इस पंक्ति में वृद्धा ने टोकरी मिट्टी को अन्याय के नैतिक बोझ का प्रतीक बनाया — एक टोकरी नहीं उठा सके, तो झोंपड़ी छीनने का पाप-भार जन्म-भर कैसे उठाएँगे?

प्रश्न 2

निम्नलिखित पंक्ति का अर्थ अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए: "जमींदार साहब पहले तो बहुत नाराज हुए, पर जब वह बार-बार हाथ जोड़ने लगी और पैरों पर गिरने लगी तो उनके भी मन में कुछ दया आ गई। किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने को आगे बढ़े। ज्यों ही टोकरी को हाथ लगाकर ऊपर उठाने लगे त्यों ही देखा कि यह काम उनकी शक्ति के बाहर है।"

हल

यह पंक्ति जमींदार के हृदय-परिवर्तन का पहला क्षण दिखाती है।
पहले वह अहंकारी था — किंतु वृद्धा की विनम्र विनती ने उसके हृदय में दया जगाई।
उसने खुद टोकरी उठाने की कोशिश की, लेकिन मिट्टी से भरी टोकरी उठाना उनकी शक्ति के बाहर निकला।
यह क्षण प्रतीकात्मक है — जो टोकरी नहीं उठा सके, उन्होंने पूरी झोंपड़ी उठा (छीन) ली थी — इस विरोधाभास ने जमींदार को अपनी गलती का एहसास दिलाया।

उत्तर: यह प्रसंग जमींदार के हृदय-परिवर्तन का आरंभ है — दया, टोकरी न उठा पाने की लज्जा, और अन्याय का बोध एक साथ आए।

प्रश्नावली 6.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

आपके विचार से कहानी का सबसे प्रभावशाली पात्र कौन है और क्यों?

हल

इस कहानी का सबसे प्रभावशाली पात्र वृद्धा है।
वह निर्बल, अनाथ और बेघर है, फिर भी वह हार नहीं मानती।
उसने न अदालत का सहारा लिया, न क्रोध किया — बल्कि विनम्रता और बुद्धि से जमींदार के हृदय में बदलाव लाई।
एक टोकरी मिट्टी के बहाने उसने पूरा अन्याय का बोझ जमींदार के सामने रख दिया।
उसका धैर्य, साहस और नैतिक बल उसे कहानी का सर्वाधिक प्रभावशाली पात्र बनाते हैं।

उत्तर: कहानी का सबसे प्रभावशाली पात्र वृद्धा है — उसकी विनम्रता, बुद्धि और नैतिक साहस ने जमींदार का हृदय परिवर्तन कर दिया।

प्रश्न 2

वृद्धा की पोती ने खाना क्यों छोड़ दिया था?

हल

पोती को अपनी झोंपड़ी — अपने घर — से गहरा लगाव था।
वह बार-बार कहती थी: 'अपने घर चल, वहीं रोटी खाऊँगी।'
झोंपड़ी उसके लिए केवल मकान नहीं, बल्कि जीवन का आधार और पहचान थी।
जब वह घर छूट गया तो उसने जिद में खाना-पीना छोड़ दिया।

उत्तर: पोती को अपनी झोंपड़ी से इतना गहरा लगाव था कि वह उसके बिना खाना नहीं खाती थी।

प्रश्न 3

जमींदार ने झोंपड़ी पर कब्जा कैसे किया?

हल

जमींदार ने 'बाल की खाल निकालने वाले' चालाक वकीलों की थैली (रिश्वत) गरम की।
वकीलों ने कानूनी दाँव-पेंच लगाकर अदालत से उस झोंपड़ी पर जमींदार का कब्जा करा दिया।
यह न्यायपूर्ण नहीं था — यह धन और कानूनी चालाकी से किया गया अन्याय था।

उत्तर: जमींदार ने वकीलों को पैसे देकर अदालत के जरिए कानूनी चाल से झोंपड़ी पर कब्जा किया।

प्रश्न 4

"महाराज क्षमा करें तो एक विनती है। ज़मींदार साहब के इशारे पर उसने कहा..." यहाँ जमींदार द्वारा इशारे करने की इस क्रिया का क्या अर्थ है?

हल

जमींदार साहब का 'इशारा' यह दर्शाता है कि वह वृद्धा की बात सुनने के लिए तैयार हुए।
इशारे से उन्होंने अनुमति दी कि वृद्धा अपनी बात कहे — यह उनके अहंकार के बावजूद उत्पन्न हुई जिज्ञासा या सहानुभूति का संकेत है।
यह इशारा कहानी में एक महत्वपूर्ण मोड़ है — यहाँ से जमींदार और वृद्धा के बीच संवाद की शुरुआत होती है।

उत्तर: जमींदार का इशारा यह दर्शाता है कि उन्होंने वृद्धा को अपनी बात कहने की अनुमति दी — यह संवाद के आरंभ का संकेत है।

प्रश्न 5

"किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने आगे बढ़े।" यहाँ जमींदार के व्यवहार में परिवर्तन का आरंभ दिखाई देता है। पहले जमींदार का व्यवहार कैसा था? इस घटना के बाद उसके व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

हल

पहले का व्यवहार: जमींदार अहंकारी, धन-मद से गर्वित और निर्दयी था। उसने वकीलों से झोंपड़ी हड़पी, वृद्धा को बेघर किया और उसे देखते ही नौकरों से हटाने को कहा।
परिवर्तन का आरंभ: वृद्धा की विनम्र विनती से उनके मन में दया आई। वह किसी नौकर को न कहकर स्वयं टोकरी उठाने आगे बढ़े — यह उनके अहंकार में पहली दरार थी।
टोकरी न उठा पाने पर उन्हें लज्जा हुई और वृद्धा के वचनों से उन्हें बोध हुआ।
अंत में उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी और झोंपड़ी वापस कर दी — यह पूर्ण हृदय-परिवर्तन था।

उत्तर: पहले जमींदार अहंकारी और निर्दयी था; टोकरी न उठा पाने और वृद्धा के वचनों से उसे बोध हुआ और उसने क्षमा माँगकर झोंपड़ी वापस कर दी।

प्रश्न 6

"उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापस दे दी।" जमींदार ने ऐसा क्यों किया?

हल

जमींदार एक टोकरी मिट्टी नहीं उठा पाए — इससे उन्हें लज्जा हुई।
वृद्धा के शब्दों ने उन्हें अन्याय का बोध कराया: 'इस झोंपड़ी में हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है, उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे?'
अपने कृतकर्म (झोंपड़ी छीनने) का पश्चाताप हुआ।
उनका अंतःकरण जागा और उन्होंने क्षमा माँगकर झोंपड़ी वापस कर दी।

उत्तर: वृद्धा के नैतिक वचनों और टोकरी न उठा पाने की लज्जा से जमींदार को अपने अन्याय का बोध हुआ और उन्होंने पश्चाताप में क्षमा माँगी।

प्रश्नावली 6.5 — अनुमान और कल्पना से

प्रश्न 1

यदि वृद्धा की पोती जमींदार से स्वयं बात करती तो वह क्या कहती?

हल

पोती भावनात्मक रूप से बोलती — 'यह झोंपड़ी हमारी दादी की है, यहाँ हमारे परिवार ने जीवन बिताया है।'
वह जमींदार से न्याय और दया की अपील करती — 'आप इतने बड़े हैं, हम गरीब हैं; हमसे यह घर मत छीनिए।'
वह शायद आक्रोश में भी बोलती — 'आपके पास इतना सब कुछ है, हमारी छोटी-सी झोंपड़ी क्यों चाहिए?'
(यह एक रचनात्मक उत्तर है; छात्र अपनी कल्पना से विस्तार कर सकते हैं।)

उत्तर: पोती जमींदार से अपने घर के प्रति लगाव, न्याय और करुणा की अपील करती।

प्रश्न 2

यदि आप जमींदार की जगह होते तो क्या करते?

हल

यदि मैं जमींदार की जगह होता, तो सबसे पहले वृद्धा की स्थिति समझता।
एक असहाय वृद्धा को बेघर करना अन्याय है — मैं उसे झोंपड़ी में रहने देता।
यदि अहाते का विस्तार जरूरी होता तो वृद्धा के लिए कोई उचित व्यवस्था करता।
(यह एक व्यक्तिगत-रचनात्मक उत्तर है।)

उत्तर: जमींदार की जगह होते तो वृद्धा को बेघर नहीं करते और उसके लिए उचित व्यवस्था करते।

प्रश्न 3

जमींदार को टोकरी उठाने में सफलता क्यों नहीं मिली होगी?

हल

एक कारण शारीरिक है — मिट्टी से भरी टोकरी बहुत भारी होती है।
दूसरा और अधिक महत्वपूर्ण कारण प्रतीकात्मक है — वह टोकरी केवल मिट्टी की नहीं थी, बल्कि वृद्धा की पीड़ा, यादों और अन्याय का बोझ भी उस मिट्टी में था।
वृद्धा की आत्मिक शक्ति और सत्य की शक्ति ने वह टोकरी भारी बना दी।
जमींदार के हाथ 'अपराध-बोध' और लज्जा से भी काँप रहे होंगे।

उत्तर: मिट्टी से भरी टोकरी भारी थी; साथ ही अन्याय और अपराध-बोध का नैतिक भार भी उसे उठाने न दे सका।

प्रश्न 4

"झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है..." — यहाँ केवल मिट्टी की बात की जा रही है या कुछ और बात भी छिपी है? (संकेत — मिट्टी किस बात का प्रतीक हो सकती है? मिट्टी के बहाने वृद्धा क्या कहना चाहती है?)

हल

यहाँ केवल मिट्टी की बात नहीं है — मिट्टी एक प्रतीक है।
मिट्टी इस झोंपड़ी में बिताए जीवन, यादों, परिश्रम और भावनाओं का प्रतीक है।
वृद्धा कहना चाहती है: इस झोंपड़ी में हजारों टोकरियाँ यादें, दुख, लगाव और जीवन पड़ा है — यह सब छीनने का बोझ (पाप) आप जन्म-भर कैसे उठाएँगे?
मिट्टी नैतिक जिम्मेदारी और अन्याय के भार का प्रतीक है।

उत्तर: मिट्टी यहाँ वृद्धा के जीवन, यादों और भावनाओं का प्रतीक है — वृद्धा कह रही है कि इस सबको छीनने का पाप-भार जमींदार जन्म-भर कैसे उठाएँगे?

प्रश्नावली 6.6 — 'कि' और 'की' का उपयोग

प्रश्न 1

नीचे दिए गए वाक्यों में 'कि' और 'की' का उपयुक्त प्रयोग कीजिए— 1. वृद्धा ने कहा _____ वह झोंपड़ी को लेने नहीं आई है। 2. वह अपनी पोती _____ चिंता में दुखी हो गई थी। 3. वृद्धा ने प्रार्थना _____ टोकरी को ज़रा हाथ लगाइए। 4. पोती हमेशा कहती थी _____ वह अपने घर में ही खाना खाएगी। 5. झोंपड़ी _____ मिट्टी से वृद्धा चूल्हा बनाना चाहती थी। 6. उसे विश्वास था _____ मिट्टी का चूल्हा देखकर पोती खाना खाने लगेगी।

हल

1. वृद्धा ने कहा **कि** वह झोंपड़ी को लेने नहीं आई है। ('कि' = संयोजक, जो कहा गया उसे जोड़ता है)
2. वह अपनी पोती **की** चिंता में दुखी हो गई थी। ('की' = संबंधसूचक, पोती का संबंध बताता है)
3. वृद्धा ने प्रार्थना **की** टोकरी को ज़रा हाथ लगाइए। ('की' = संबंधसूचक)
4. पोती हमेशा कहती थी **कि** वह अपने घर में ही खाना खाएगी। ('कि' = संयोजक)
5. झोंपड़ी **की** मिट्टी से वृद्धा चूल्हा बनाना चाहती थी। ('की' = संबंधसूचक)
6. उसे विश्वास था **कि** मिट्टी का चूल्हा देखकर पोती खाना खाने लगेगी। ('कि' = संयोजक)

उत्तर: 1. कि | 2. की | 3. की | 4. कि | 5. की | 6. कि

प्रश्न 2

नीचे दिए गए शेष वाक्यों में 'कि' और 'की' का उपयुक्त प्रयोग कीजिए— 7. वृद्धा _____ आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। 8. उसने यह सोचा _____ झोंपड़ी से मिट्टी ले जाकर चूल्हा बनाऊँगी। 9. वृद्धा के मन _____ पीड़ा उसकी बातों में झलक रही थी। 10. जमींदार इतने लज्जित हुए _____ टोकरी उठाने की बात मान ली। 11. उस झोंपड़ी _____ हर दीवार वृद्धा _____ यादों से भरी थी।

हल

7. वृद्धा **की** आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी।
8. उसने यह सोचा **कि** झोंपड़ी से मिट्टी ले जाकर चूल्हा बनाऊँगी।
9. वृद्धा के मन **की** पीड़ा उसकी बातों में झलक रही थी।
10. जमींदार इतने लज्जित हुए **कि** टोकरी उठाने की बात मान ली।
11. उस झोंपड़ी **की** हर दीवार वृद्धा **की** यादों से भरी थी।

उत्तर: 7. की | 8. कि | 9. की | 10. कि | 11. की / की

प्रश्नावली 6.7 — मुहावरे

प्रश्न 1

"बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया।" इस वाक्य में मुहावरों की पहचान करके उन्हें रेखांकित कीजिए।

हल

इस वाक्य में दो मुहावरे हैं:

1. **बाल की खाल निकालना** — अर्थ: बहुत बारीकी से तर्क देना; छोटी-से-छोटी बात में भी पेंच निकालना।
2. **थैली गरम करना** — अर्थ: रिश्वत देना; धन देकर काम कराना।

उत्तर: मुहावरे: (1) बाल की खाल निकालना (2) थैली गरम करना

प्रश्न 2

'बाल' शब्द से जुड़े निम्नलिखित मुहावरों का उपयोग करते हुए वाक्य बनाइए: • बाल बाँका न होना • बाल बराबर • बाल बराबर फ़र्क होना • बाल-बाल बचना

हल

1. **बाल बाँका न होना** (कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना): भगवान की कृपा से बाढ़ में भी हमारे घर का बाल बाँका नहीं हुआ।
2. **बाल बराबर** (बहुत सूक्ष्म / बहुत महीन): उस दोनों पौधों में बाल बराबर भी अंतर नहीं दिखाई देता।
3. **बाल बराबर फ़र्क होना** (जरा-सा भी भेद होना): दोनों जुड़वाँ बहनों की आवाज़ में बाल बराबर फ़र्क है।
4. **बाल-बाल बचना** (बहुत थोड़ी कमी रह जाना): तेज़ गति से आती कार से वह बाल-बाल बच गया।

उत्तर: वाक्य-निर्माण — बाल बाँका न होना: 'भगवान की कृपा से बाढ़ में भी हमारा बाल बाँका नहीं हुआ।' | बाल बराबर: 'दोनों की लिखावट में बाल बराबर अंतर है।' | बाल बराबर फ़र्क होना: 'दोनों में बाल बराबर फ़र्क है।' | बाल-बाल बचना: 'वह दुर्घटना से बाल-बाल बचा।'

प्रश्नावली 6.8 — काल

प्रश्न 1

नीचे दिए गए वाक्यों को वर्तमान और भविष्य काल में बदलिए— (क) वह गिड़गिड़ाकर बोली। (ख) श्रीमान् ने आज्ञा दे दी। (ग) उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। (घ) जमींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई। (ङ) उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापस दे दी।

हल

(क) **वह गिड़गिड़ाकर बोली।** (भूतकाल)
वर्तमान: वह गिड़गिड़ाकर बोल रही है।
भविष्य: वह गिड़गिड़ाकर बोलेगी।

(ख) **श्रीमान् ने आज्ञा दे दी।** (भूतकाल)
वर्तमान: श्रीमान् आज्ञा दे रहे हैं।
भविष्य: श्रीमान् आज्ञा दे देंगे।

(ग) **उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी।** (भूतकाल)
वर्तमान: उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लग रही है।
भविष्य: उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगेगी।

(घ) **जमींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई।** (भूतकाल)
वर्तमान: जमींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हो रही है।
भविष्य: जमींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा होगी।

(ङ) **उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापस दे दी।** (भूतकाल)
वर्तमान: वे वृद्धा से क्षमा माँग रहे हैं और उसकी झोंपड़ी वापस दे रहे हैं।
भविष्य: वे वृद्धा से क्षमा माँगेंगे और उसकी झोंपड़ी वापस दे देंगे।

उत्तर: (क) वर्त.: बोल रही है; भवि.: बोलेगी | (ख) वर्त.: दे रहे हैं; भवि.: दे देंगे | (ग) वर्त.: बहने लग रही है; भवि.: बहने लगेगी | (घ) वर्त.: हो रही है; भवि.: होगी | (ङ) वर्त.: माँग रहे हैं/दे रहे हैं; भवि.: माँगेंगे/दे देंगे

प्रश्नावली 6.9 — वचन की पहचान

प्रश्न 1

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द भरिए— (क) वृद्धा झोंपड़ी के भीतर _____। (गई/गइ) (ख) वृद्धा गिड़गिड़ाकर _____। (बोली/बोलीं) (ग) पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया _____। (है/हैं) (घ) उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी _____। (थी/थीं) (ङ) उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और बाहर ले _____। (आई/आइ) (च) झोंपड़ी में बसी पुरानी यादें वृद्धा को रुला _____। (गई/गइ) (छ) पाठक देख सकते हैं कि कैसे एक छोटी-सी टोकरी ने बड़े बदलाव ला दिए _____। (है/हैं)

हल

(क) वृद्धा झोंपड़ी के भीतर **गई**। (एकवचन, स्त्रीलिंग — 'गइ' अशुद्ध है)
(ख) वृद्धा गिड़गिड़ाकर **बोली**। (एकवचन — 'बोलीं' बहुवचन या आदरसूचक होता है)
(ग) पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया **है**। (एकवचन)
(घ) उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी **थी**। ('आँखों' बहुवचन है पर 'धारा' एकवचन है — क्रिया 'धारा' के अनुसार)
(ङ) उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और बाहर ले **आई**। ('आइ' अशुद्ध रूप है)
(च) झोंपड़ी में बसी पुरानी यादें वृद्धा को रुला **गईं**। (बहुवचन — 'यादें')
(छ) पाठक देख सकते हैं कि कैसे एक छोटी-सी टोकरी ने बड़े बदलाव ला दिए **हैं**। (बहुवचन — 'बदलाव')

उत्तर: (क) गई | (ख) बोली | (ग) है | (घ) थी | (ङ) आई | (च) गईं | (छ) हैं

प्रश्नावली 6.10 — शब्दकोश का उपयोग

प्रश्न 1

नीचे कुछ शब्दों के अनेक अर्थ शब्दकोश से चुनकर दिए गए हैं। इन शब्दों के जो अर्थ इस कहानी के अनुसार सबसे उपयुक्त हैं, उन पर घेरा बनाइए— वाक्य 1: 'श्रीमान् के सब प्रयत्न निष्फल हुए' रेखांकित शब्द: 'श्रीमान्' अर्थ: धनी, शोभायुक्त, शोभावान्, संपत्तिशाली, संपन्न, पुरुषों के नाम के पूर्व आदर-सूचनार्थ लगाया जाने वाला शब्द।

हल

वाक्य में 'श्रीमान्' जमींदार के लिए प्रयुक्त हुआ है।
कहानी में यह शब्द जमींदार (एक सम्मानित/धनी व्यक्ति) के लिए आदर-सूचनार्थ प्रयोग हुआ है।
उपयुक्त अर्थ: **पुरुषों के नाम के पूर्व आदर-सूचनार्थ लगाया जाने वाला शब्द।**

उत्तर: पुरुषों के नाम के पूर्व आदर-सूचनार्थ लगाया जाने वाला शब्द।

प्रश्न 2

वाक्य 2: 'पतोहू भी एक पाँच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी।' रेखांकित शब्द: 'कन्या' अर्थ: अविवाहित लड़की, एक राशि का नाम, लड़की, बड़ी इलायची।

हल

वाक्य में 'कन्या' का प्रयोग पतोहू की छोटी बच्ची (पुत्री) के लिए हुआ है।
यहाँ उपयुक्त अर्थ: **लड़की** (बालिका/बच्ची)।

उत्तर: लड़की

प्रश्न 3

वाक्य 3: 'जमींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई।' रेखांकित शब्द: 'महल' अर्थ: राजा या रईस आदि के रहने का बहुत बड़ा और बढ़िया मकान, प्रासाद, अंतःपुर, पत्नी, उतरने की जगह।

हल

वाक्य में 'महल' जमींदार के विशाल और वैभवशाली आवास के लिए प्रयुक्त हुआ है।
उपयुक्त अर्थ: **राजा या रईस आदि के रहने का बहुत बड़ा और बढ़िया मकान।**

उत्तर: राजा या रईस आदि के रहने का बहुत बड़ा और बढ़िया मकान।

प्रश्न 4

वाक्य 4: 'वह तो कई जमाने से वहीं बसी थी।' रेखांकित शब्द: 'जमाना' अर्थ: काल, बहुत अधिक समय, सौभाग्य का समय, संसार, जगत्, राज्यकाल, अवधि, युग, कार्यकाल, विलंब, देर, अतिकाल।

हल

वाक्य में 'जमाने' का अर्थ है — बहुत लंबे समय से।
वृद्धा कई पीढ़ियों से उस झोंपड़ी में रह रही थी।
उपयुक्त अर्थ: **बहुत अधिक समय** / **युग**।

उत्तर: बहुत अधिक समय

प्रश्न 5

वाक्य 5: 'यही उसकी पोती इस वृद्धावस्था में एकमात्र आधार थी।' रेखांकित शब्द: 'आधार' अर्थ: सहारा, आलंबन, पात्र (नाटक), नींव, बाँध, नहर, संबंध, बरतन, परिस्थितियाँ, अधिष्ठान, आश्रय देनेवाला, पालन करनेवाला।

हल

वाक्य में 'आधार' का प्रयोग वृद्धा के जीवन के सहारे के अर्थ में हुआ है।
पोती ही वृद्धा का एकमात्र सहारा थी।
उपयुक्त अर्थ: **सहारा / आश्रय देनेवाला।**

उत्तर: सहारा / आश्रय देनेवाला

प्रश्नावली 6.11 — भावों की पहचान

प्रश्न 1

नीचे दी गई पंक्तियों में प्रकट हो रहे भावों से उनका मिलान कीजिए— क्रम 1: 'वह लज्जित होकर कहने लगे— नहीं, यह टोकरी हमसे न उठाई जाएगी।' भावों की सूची: ममता/स्नेह, दुख/पीड़ा, विनम्रता/विनय, अहंकार/घमंड, बोध/आत्मज्ञान, आस्था/विश्वास, जुड़ाव/मोह, करुणा/दया, क्रूरता/अन्याय, लज्जा/पश्चाताव

हल

जमींदार एक टोकरी मिट्टी नहीं उठा सका और लज्जित हो गया।
यह दृश्य उनमें **लज्जा/पश्चाताव** का भाव प्रकट करता है।

उत्तर: लज्जा/पश्चाताव

प्रश्न 2

क्रम 2: 'वृद्धा के उपयुक्त वचन सुनते ही उनकी आँखें खुल गईं।'

हल

जमींदार की आँखें खुलना अर्थात् उन्हें अपनी गलती का बोध हुआ।
इस पंक्ति से **बोध/आत्मज्ञान** का भाव प्रकट होता है।

उत्तर: बोध/आत्मज्ञान

प्रश्न 3

क्रम 3: 'उनके मन में कुछ दया आ गई।'

हल

जमींदार के मन में वृद्धा की दयनीय स्थिति देखकर दया उत्पन्न हुई।
इस पंक्ति से **करुणा/दया** का भाव प्रकट होता है।

उत्तर: करुणा/दया

प्रश्न 4

क्रम 4: 'इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी।'

हल

वृद्धा को विश्वास (भरोसा) था कि झोंपड़ी की मिट्टी का चूल्हा देखकर पोती खाने लगेगी।
इस पंक्ति से **आस्था/विश्वास** का भाव प्रकट होता है।

उत्तर: आस्था/विश्वास

प्रश्न 5

क्रम 5: 'महाराज क्षमा करें तो एक विनती है।'

हल

वृद्धा ने जमींदार से क्षमा माँगते हुए विनम्रतापूर्वक विनती की।
इस पंक्ति से **विनम्रता/विनय** का भाव प्रकट होता है।

उत्तर: विनम्रता/विनय

प्रश्न 6

क्रम 6: 'अब यही उसकी पोती इस वृद्धावस्था में एकमात्र आधार थी।'

हल

पोती वृद्धा का एकमात्र सहारा है — यह संबंध और लगाव की बात है।
इस पंक्ति से **ममता/स्नेह** का भाव प्रकट होता है।

उत्तर: ममता/स्नेह

प्रश्न 7

क्रम 7: 'जमींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे।'

हल

जमींदार धन के नशे में अंधा होकर अहंकारी हो गया था।
इस पंक्ति से **अहंकार/घमंड** का भाव प्रकट होता है।

उत्तर: अहंकार/घमंड

प्रश्न 8

क्रम 8: 'उस झोंपड़ी में उसका मन ऐसा कुछ लग गया था कि बिना मरे वहाँ से वह निकलना ही नहीं चाहती थी।'

हल

वृद्धा का झोंपड़ी से इतना गहरा लगाव था कि बिना मृत्यु के वह वहाँ से जाना नहीं चाहती थी।
इस पंक्ति से **जुड़ाव/मोह** का भाव प्रकट होता है।

उत्तर: जुड़ाव/मोह

प्रश्न 9

क्रम 9: 'जब उसे अपनी पूर्वस्थिति की याद आ जाती तो मारे दुख के फूट-फूटकर रोने लगती थी।'

हल

अपनी पूर्व की सुखद स्थिति और वर्तमान की दयनीय दशा की तुलना से वृद्धा को गहरा दुख होता था।
इस पंक्ति से **दुख/पीड़ा** का भाव प्रकट होता है।

उत्तर: दुख/पीड़ा

प्रश्न 10

क्रम 10: 'बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया।'

हल

जमींदार ने कानूनी दाँव-पेंच और रिश्वत से एक अनाथ वृद्धा की झोंपड़ी हड़प ली।
इस पंक्ति से **क्रूरता/अन्याय** का भाव प्रकट होता है।

उत्तर: क्रूरता/अन्याय